ला कुम्ब्रे ज्वालामुखी

सुर्खियों में क्यों?

- साइंस ला कुम्ब्रे ज्वालामुखी की एक आकर्षक छवि ने उस समय बहुत ध्यान आकर्षित किया जब यह पिछले महीने पहली बार फूटा था। लेकिन अप्रैल के अंत तक, लावा अभी भी बह रहा है और इगुआना से ढके पहाड़ के नीचे अपना रास्ता बना रहा है जो उनके निवास स्थान को प्रभावित कर रहा है।

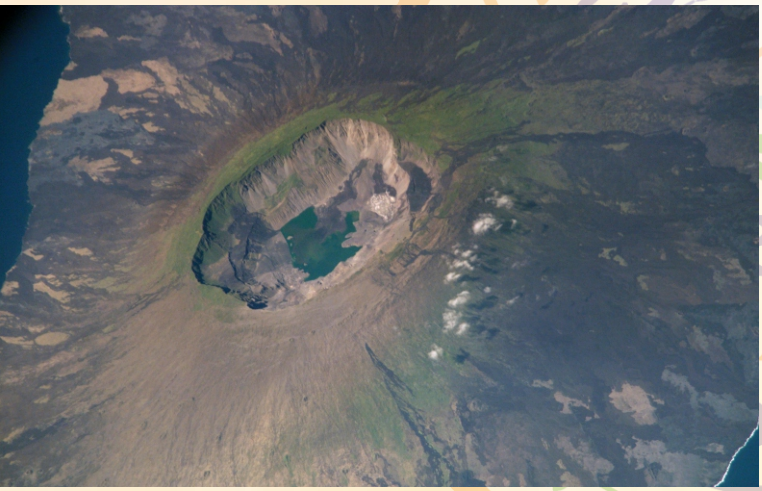

समाचार के बारे में अधिक जानकारी

- ला कुम्ब्रे ज्वालामुखी मुख्य भूमि इक्वाडोर से लगभग 1,125 किलोमीटर दूर स्थित है और 2020 के बाद पहली बार फटा है।
- पिछले महीने नासा की अर्थ ऑब्जर्वेटरी द्वारा ली गई तस्वीरों में लावा धीरे-धीरे ज्वालामुखी के शिखर के पास एक दरार से निकलकर पहाड़ की पेड़ों से ढकी ढलानों की ओर बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है।
- तब से, ज्वालामुखी से लगातार लावा निकल रहा है, और अप्रैल की शुरुआत में, पिघली हुई चट्टान की नदी ला कुम्ब्रे से लगभग 6 मील (10 किमी) दूर द्वीप के तट तक पहुंच गई ।
- जैसे ही लावा समुद्र से मिला, लहरों से भाप के बड़े-बड़े गुबार उठे और पानी ने अति गर्म चट्टान को ठंडा कर दिया।
- ला कुम्ब्रे वर्तमान में हर चार साल में एक बार फटता है और यह मैग्मा हॉटस्पॉट के ठीक ऊपर स्थित है, जिसे मेंटल प्लम के रूप में जाना जाता है, जिसने इस निर्जन प्रशांत द्वीप और गैलापागोस के बाकी हिस्सों को जन्म दिया।
- ला कुम्ब्रे में पहले भी बहुत अधिक हिंसक विस्फोट हुए हैं।
- इसका सबसे ताजा उदाहरण 1968 में देखने को मिला, जब ज्वालामुखी के क्रेटर झील का पानी जलमग्न मैग्मा के साथ मिल गया, जिससे एक शक्तिशाली विस्फोट हुआ।
- हालांकि, अर्थ ऑब्ज़र्वेटरी के अनुसार, वर्तमान विस्फोट के दौरान ऐसा होने की संभावना नहीं है।

भारत में आर्द्र गर्म लहरें

चर्चा में क्यों?

- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार ओडिशा और गंगीय पश्चिम बंगाल में क्रमशः 15 अप्रैल और 17 अप्रैल से ही लू चल रही है। आंतरिक कर्नाटक में 23 अप्रैल से ही लू चल रही है।

समाचार के बारे में अधिक जानकारी

- भारत के कई हिस्सों में नमी का स्तर सामान्य से कहीं ज़्यादा है। ओडिशा और पश्चिम बंगाल जैसे

राज्यों में तो उमस भरी गर्मी भी पड़ रही है, जिससे लोगों का जीना मुश्किल हो गया है।

- ऐसा देश भर में कई मौसम प्रणालियों द्वारा पंप की जा रही नमी के कारण हो रहा है, जो वायुमंडल और महासागरों की सामान्य वार्मिंग से और अधिक बढ़ रही है।
- आंध्र प्रदेश के रायलसीमा क्षेत्र के साथ-साथ पश्चिम बंगाल के उप-हिमालयी हिस्से भी 24 अप्रैल से हीटवेव से पीड़ित होने लगे। 26 अप्रैल को दुर्लभ लू ने बिहार के साथ-साथ केरल को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया।
- जब वायुमंडल में नमी का स्तर अधिक होता है, तो हवा संतृप्त हो जाती है और अधिक जलवाष्प धारण नहीं कर पाती है। इससे किसी क्षेत्र का परिवेशीय तापमान बढ़ जाता है और मनुष्यों और जानवरों को पसीना भी कम आता है।
- इससे शरीर का आंतरिक तापमान बढ़ जाता है क्योंकि गर्मी बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं होता और बेचैनी बढ़ जाती है। जब ऐसी परिस्थितियाँ लंबे समय तक बनी रहती हैं, तो यह मानव स्वास्थ्य, विशेष रूप से हृदय और मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं और घातक भी हो सकती हैं।
- इस समय अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के ऊपर दो विशाल प्रतिचक्रवात हैं, जो ओडिशा और पश्चिम बंगाल तथा महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में हवाएं ला रहे हैं।
- प्रतिचक्रवात उच्च वायुमंडलीय दबाव वाले क्षेत्र होते हैं जहाँ हवाएँ नीचे की ओर डूबती हुई गति से चलती हैं, संकुचित होती हैं और गर्म होती हैं। वे हवाओं को नीचे की दिशा में चलाकर और अन्य मौसम प्रणालियों को अवरुद्ध करके हीटवेव का कारण बनते हैं जो हीटवेव को नष्ट कर सकते हैं।

सुपरसोनिक मिसाइल-असिस्टेड रिलीज़ ऑफ़ टॉरपीडो (स्मार्ट) प्रणाली

खबरों में क्यों?

- ओडिशा के तट पर डॉ एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण किया गया।

समाचार के बारे में अधिक जानकारी

- स्मार्ट एक अगली पीढ़ी की मिसाइल-आधारित हल्के वजन वाली टारपीडो डिलीवरी प्रणाली है, जिसे भारतीय नौसेना की पनडुब्बी रोधी युद्ध

क्षमता को हल्के टारपीडो की पारंपरिक सीमा से कहीं अधिक बढ़ाने के लिए रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा डिजाइन और विकसित किया गया है।

- इस कनस्तर-आधारित मिसाइल प्रणाली में कई उन्नत उप-प्रणालियाँ शामिल हैं, अर्थात् दो-चरण ठोस प्रणोदन प्रणाली, इलेक्ट्रोमैकेनिकल एक्चुएटर प्रणाली, सटीक जड़त्वीय नेविगेशन प्रणाली आदि।
- यह प्रणाली पैराशूट-आधारित रिलीज प्रणाली के साथ पेलोड के रूप में उन्नत हल्के वजन वाले टारपीडो को ले जाती है।
- मिसाइल को ग्राउंड मोबाइल लॉन्चर से लॉन्च किया गया था।
- इस परीक्षण में सममित पृथक्करण, इजेक्शन और वेग नियंत्रण जैसे कई अत्याधुनिक तंत्रों को मान्य किया गया है।
- इस प्रणाली के विकास से भारतीय नौसेना की ताकत और बढ़ जाएगी।

दुनिया भर में 'अस्वस्थ हवा' के लिए काठमांडू शीर्ष पर है

खबरों में क्यों?

- दुनिया के 101 शहरों के वास्तविक समय के प्रदूषण को मापने वाली संस्था IQAir के अनुसार,

काठमांडू दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर पाया गया।

समाचार के बारे में अधिक जानकारी

- काठमांडू में हवा की गुणवत्ता दुनिया में 'अस्वास्थ्यकर हवा' वाले शहरों की सूची में शीर्ष पर थी।
- प्रदूषण के मामले में काठमांडू, नई दिल्ली, थाईलैंड में चियांग माई, वियतनाम में हनोई, थाईलैंड में बैंकॉक और बांग्लादेश में ढाका क्रमशः पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें स्थान पर हैं।

- दुनिया भर में वायु प्रदूषण के स्तर को मापने वाली 'विश्व वायु गुणवत्ता सूचकांक-रैंकिंग' के अनुसार, काठमांडू की हवा दुनिया की अस्वास्थ्यकर वायु सूची में शीर्ष पर है।
- वायु प्रदूषण हृदय और रक्त वाहिकाओं, फेफड़ों, मस्तिष्क, आंखों, नाक, कान और गले को प्रभावित करता है और अस्थमा, कैंसर और अन्य बीमारियों का खतरा भी बढ़ाता है।
- नेपाल के स्वास्थ्य एवं जनसंख्या मंत्रालय के अनुसार, बढ़ती गर्मी और प्रदूषण के कारण देश भर के अस्पतालों और स्वास्थ्य सुविधाओं में मरीजों की संख्या में वृद्धि हुई है।
- स्वास्थ्य एवं जनसंख्या मंत्रालय ने काठमांडू घाटी में वायु प्रदूषण में वृद्धि को देखते हुए लोगों से मास्क पहनने का आग्रह किया है।

वंशानुक्रम कर

चर्चा में क्यों?

- उत्तराधिकार कर, जिसे अक्सर "मृत्यु कर" कहा जाता है, भारतीय प्रवासी कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा की हाल की टिप्पणियों के बाद भारत में बहस का विषय बनकर उभरा है ।

समाचार के बारे में अधिक जानकारी

- इसे एस्टेट ड्यूटी अधिनियम 1953 के अनुसार लगाया गया था, लेकिन बाद में "सामाजिक असमानता पर अंकुश लगाने" के अपने उद्देश्य को प्राप्त न कर पाने के कारण इसे निरस्त कर दिया गया था।
- यह कर उस संपत्ति पर लगाया जाता है जो मृत व्यक्ति किसी वैध उत्तराधिकारी या उत्तराधिकारी के लिए छोड़ता है।
- भारत उन देशों में से एक होने के बावजूद जहां विरासत कर वर्तमान में नहीं लगाया जाता है, यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि इसे आर्थिक प्रशासन आयोग की सिफारिश के बाद वर्ष 1985 में समाप्त होने से पहले संपत्ति शुल्क के रूप में लगाया गया था।
- शोधकर्ताओं द्वारा विरासत कर के पक्ष में दिया गया प्राथमिक और सबसे सम्मोहक तर्क यह है कि इससे सरकारी राजस्व में वृद्धि होगी, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) को बढ़ावा मिलेगा और अंततः देश की समग्र आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा मिलेगा।

- फिर भी, विरासत कर खामियों से रहित नहीं है। इसके ख़िलाफ़ मुख्य तर्क यह है कि इससे बचत और निवेश प्रक्रिया धीमी हो सकती है। लोग अधिक कमाने के लिए अनिच्छुक होंगे क्योंकि उन्हें लगेगा कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा कर लगाया जाएगा।

- इससे आर्थिक विकास और नवाचार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, जो किसी देश या क्षेत्र के लिए हानिकारक होगा। इसके अलावा, इस धारणा के बावजूद कि उत्तराधिकार कर जटिल और प्रशासनिक रूप से बोझिल है, यह वास्तव में करदाताओं और सरकार दोनों के लिए अनुपालन लागत बढ़ाता है।
- जैसा कि प्रमुख अर्थशास्त्री और वकील नानी पालखीवाला ने कहा है, "हमारी अर्थव्यवस्था की सेहत तब तक नहीं सुधरेगी जब तक हम अपने राजकोषीय विनियमनों को "एस" कारक नहीं देते और उन्हें विवेकपूर्ण, सरल और स्थिर नहीं बनाते।

प्रयास
IAS ACADEMY
An Institute for UPSC & BPSC
FESTIVAL OFFER upto 50% OFF*
GS FOUNDATION COURSE FOR UPSC
English Medium
COMMENCING FROM 3rd MAY
MODE: Offline & Online